अंजोरिया

साल - 1 : अंक - 4 कातिक
अंजोरिया 2060/नवम्बर 2003

एह अंक में :

चार गो गजल	बरमेश्वर सिंह	2
परबतिया - कहानी	डा. जनार्दन राय	3
झाह में जिनगी - कविता	मलयार्जुन	6
देवी गीत	किशन गोरखपुरी	6
एहसान - कहानी	डा.श्रीप्रकाश पाण्डेय	7
भोजपुरी लोकगीत में आधुनिक भाव-बोध	सतीश प्रसाद सिन्हा	10
अयनक में	रामनिवास वर्मा 'शिशिर'	11

चार गो गजल

बरमेश्वर सिंह

एक

सोच जब सहक गइल,
मन तनी बहक गइल।
जे रहे दबल-दबल,
आग उ दहक गइल।
चांद के नजर उठल,
चांदनी चहक गइल।
मन पलाश हो गइल,
खिल गइल, टहक गइल।
रूप-गंध का कहीं,
रात भर महक गइल।
जब गइल घटा घटे,
मोर-मन डहक गइल।

दो

मन तनी बेमार बा,
दुख मगर अपार बा।
घर पुरान हो चलल,
ढह चलल दुआर बा।
पोर-पोर पीर अब,
हो चलल पहाड़ बा।
भीड़-भाड़ बा मगर,
के भला हमार बा।
बा सवाल खाड़ अब,
जीत बा कि हार बा।
एक बात हम कहब,
जिन्दगी से प्यार बा।

तीन

आग जब नरम भइल,
राख तब करम भइल।
दांव कुल्हि हारि के,
जीत के भरम भइल।
अब त बस कुभाव बा,
आज के धरम भइल।
पेट के हिसाब में,
माथ बा गरम भइल।
बा झुकल-झुकल नजर,
खाड़ बा शरम भइल।
का कहीं, ए जिन्दगी,
एक ना मरम भइल।

चार

बा अजब लहर चलल,
गांव उठ शहर चलल।
राह ई रूकी कहां,
सोच बा हहर चलल।
अनचिन्हार बा हवा,
सांस बा सिहर चलल।
हाल-चाल देख लीं,
पांत में जहर चलल।
पीर बा कि तीर बा,
आंख से नहर चलल।
का गजल कहीं भला,
रूठ के बहर चलल।

धनडीहा, भोजपुर- 802160

कहानी

परबतिया

डा0 जनार्दन राय

भोर होत रहे। मुरूगा बोलल-कुकू हो कू। लाली राम बाबा का इनार पर नहात खाने गवलनि - 'प्रात दरसन द.. हो गंगा, प्रात दरसन द..।' भोर का भजन में मस्त लाली के गवनई खाली उनहीं के ना, चिरई-चुरूंग, जड़-चेतन, मरद-मेहरारू सभकरा दिल में पइठि के गुदगुदी पैदा कइ दिहल करे। लाली गिरहत रहलन। उनुकरा गांव का लन्द-फन्द से कवनो ढेर मतलब ना रहे। दिन में मजूरी आ सांझि खाने नहा धो के अक्सर गावल करसु -

'कह कबीर कमाल से, दुइ बात लिख लेइ।
आये का आदर करें, खाने के किछु देइ।'

कबीर कमाल से आ हम उनहीं का बाति के दोहासत बानीं - 'जे केहू दुवारे आवे, ओके इजति से बइठाईं आ जवने नून रोटी बा, सिक्कम भर पवाईं।' एह बानी के जे मानी, ओकरा पानी के रइछा परवर दिगार काहे ना करिहे !

एक दिन भोर में लालीबो पिछुवारा से लवटला का बाद अपना पतोहि से कहली - 'ए दुलहिन! दुअरिया में डोर बा, गगरिया लेइ के तनी इनरा से लपकल पानी ले ले आव, नाहीं त काली माई के छाक देबे में देरी हो जाई। कहिये के भरवटी ह, आजुले अबहीं पूरा ना भइल।'

का जाने काहें दो, ओह दिन उ असकतियात रहली बाकिर सासु का हुकुम के टारल उनुका बस के बाति ना रहे। डोर कान्हि पर, गगरी करिहांन पर धइ के चलि दिहली। गोड़ लपिटात रहे, पुरूवा के पिटल देहिं, पोर-पोर अंइठात रहे। लसियाइल त रहबे कइल बाकिर कवनो ढेर फिकिर ना रहे काहे कि उनुका पेट में भगवान के दिहल फूल अब विकास पर रहे। गोड़ भारी भइ गइल रहे। सासु का चुपे-चुपे कबो-कबो करइला के सोन्ह माटी जीभि पर धइ के सवाद लेइ लिहल करसु। जीव हरदम मिचियाइल करे। सासु एहपर धियान ना देसु। बाकिर एक दिन रहिला में से माटी बीनि के दुलहिन अपना फाड़ में धरत रहली, एके लाली बो देखि लिहली आ पूछली, 'काहो दुलहिन, कवनो बाति नइखे नू?' एतना सुनते घुघुट काढ़त तनिकी भर मुसुकाई दिहली। पतोहि के हंसल आ संगही लजाइल चुप्पी संकार लिहलसि कि किछु न किछु बाति जरूर बा।

भइल का कि डोर में गगरी के मेहंकड़ फंसाई के इनार में लटकाइ के पानी भरल गगरी जेवहीं खिंचे के मन कइली, मूस के कुटुड़ल डोरि भक् से टूटि गइल। गगरी इनार में आ देहि जगति से भुइंया गिरि के चारू पले परि गइल। आंखि ताखि टंगा गइल। मुंह प एगो अजबे पियरी पसरि गइल। कुल्ला गलाली करे आ किछु लोग पानी खाति इनार पर जुटे लागल रहे बाकिर अबहीं मजिगर भीड़ ना रहे। जेतने रहे अरहि अरहि, हाय हाय करे खातिर कम ना रहे। बड़इया बो बड़ फरहर मेहरारू रहे। चट देने लाली का पतोहि के मुड़ी जांघि पर धइ के सुहरावे लागलि। मीजत, माड़त, सुहुरावत कवनो देरी ना लागल। दू-तीन पहर में उनके देहिं कौहथ में आ गइल, तबले लालीबो पहुंचली आ कहली कि-'का ए दुलहिन, एनिये आके ई कवन मेला लगा दिहलू ह.., तह के कवनो काम भरिये हो जाला।' तले बुढ़उ कहलनि-'ना चुप रहबू, देखते बाडू की पतोहि जगति पर से ढहि के बेहोस परल बिये आ तूं अपना

मन के पंवरी पसरले बाड़ू।' एतना सुनते लाली बो हक्का-बक्का हो गइली आ रोवते में रागि कढ़वली- 'बछिया हो, बछिया।' तले फेरू बुढ़उ डपटलनि। लाली बो सिट्ट लगा गइली। उ चुप त जरूर हो गइली बाकिर कोंखि में परल फूल के ले के चिन्ता गरेसले रहे, जवन कहे लायेक ना रहे बाकिर पतोहि के लूर सहुर गुन गिहियांव आ पानी खातिर अरहवला के ले के लाली बो भितरे-भीतर कुंथत रहली। ना किछु कहिये जा ना रहिये जा। संपहवा बाबा, राम बाबा, सकड़ी दाई, काली माई, गंगाजी, सातो बहिनी, सत्ती माई, सभकर चिरउरी मिनती भइल। किछु देरी का बाद बड़इया बो कहलसि-काहो? देहिं काहें छोड़ले बाड़ू? तनी टांठ होख..। हिम्मत बान्ह..। देखते बाड़ू कि सासुजी छपिटाइ के रहि गइल बाड़ी। एतना सुनते पतोहि लमहर सांसि लेइ के कहलसि - ' जिनि घबराईं, काली का किरिया से किछु ना होई। नहाईं, धोईं। छाक देईं, सब ठीक बा।'

पतोहि घरे गइल आ लाली बो ओह दिन भुंइपरी क के परमजोति का थाने गइली। सांझिसबेरे मनवती-भखवती होखे लागल। पियार से पखाइल, सनेह से संवारल, चूमल-चाटल देहि देखे लायेक हो गइल। सुख के दिन सहजे सवरे लागल। दुख बिला गइल। दिन बीतल देरी ना लागे। एक दिन उहो आइल जब भोर में लाली बो के पतोहिं का कोंखि से लछिमी के जनम भइल। धूमन बाबा बीतल बातिन के त बतइये देसु, अगवढ़ के जेवन फोटो खींचस उ साल छव महीना में साफे झलके लागे। एसे उनुकर मोहल्ला में बड़ा इज्जत अबरूह रहे। उहां का ए कदम साधु मिजाज के असली फकीर रहलीं। का मियां-हिंदू, ठाकुर-ठेकान, डोम-चमार, बाम्हन-भुइहार, धुनिया, नोनिया, कमकर, कुर्मी, कोहार, सभकर भला मनावल उहां के सहज सुभाव रहे। पूख नछत्तर में जनमल परबतिया अब धीरे-धीरे नि दूना रात चउगुना संयान होखे लागल। किछु बूझल, समुझल, समुझावल आ अपना बेहवार से दूसरका के खुस कइ दिहल ओकरा खातिर सहज बाति रहे।

टोल, महाल, आपन, पराया, घर-दुवार सभ के अपने बूझे। अब अइसनों दिन आइल जे एकरा से थाना, पुलिस, पियादा, सभ केहू थहरा जा। थथमि जा। पढ़ि-लिख के परबतिया परिवार के चौचक बना दिहलसि। माई-बाबू, घर-गांव, सभकरा संगे रहते परबतिया कविता करे के सीख लिहलसि। समाज में इज्जत के डंका बाजि गइल। एक दिन गांव के परधानों बनि गइलि। मुखिया, हाकिम-हुकाम सभे केहू आवे लागल। कविताई का ललक में एक दिन 'परबतिया' परानपुर का पोखरा पर बनल इसकूल का कवि सम्मेलन में चलि गइल आ सुर-साधि के गवलसि -

हमरे सिवनवां में फहरे अंचरवा,

फहरि मारेला हो, लहरि मारेला!

एतना सुनते 'परबतिया' का आंचर पर मुखिया जी के कूर नजर परि गइल आ ओही दिन से ओके धरे बदे कवनो कोर कासर ना छोड़लनि। गोटी बइठावे जगसन आ अइसन बइठल कि मुखिया जी एक दिन मंत्री बनि गइलन। अब 'परबतिया' पर डोरा डाले में चार चान लागि गइल। दिन-दिन परबतिया बढ़े लागल। रूप, गुन, जस, पद, मये में विस्तार होखे लागल। 'परबतिया' गांव में सड़क बनावे बदे एक दिन मंत्री जी का बंगला पर चढ़ि गइल। 'परबतिया' आखिर मेहररूवे न रहे। रूप गुन रहबे कइल। जाने-अनजाने 'परबतिया' मंत्री का कामातुर हविश के शिकार हो गइल। लोग-लालच में उ किछु ना कहलसि। कुंवार मंत्री जी बियाह के प्रस्ताव दे के 'परबतिया' के घपला में रखले रहि गइलन। पेट में परल बिया जामे लागल। जइसे-जइसे दिन बीते लागल चिंता बढ़े लागल। एक दिन परबतिया हिम्मत बान्हि के बियाह वाला प्रस्ताव के रखलसि। मंत्री जी टारे लगलनि आ एक दिन उहो आइल जब उ अपना परबतिया का पेट में परल पाप के छिपावे बदे पोखरा में अपना गुरूगन से

जियते गड़वा दिहलनि।

लइका, बूढ़, जवान, पुलिस, पियादा, गांव, जवार सभ जानल एह कांड के। बाकिर मंत्री जी का डर से केहू सांसि ना लिहल। उनुकरा पेशाब से दिया जरेला। डर का मारे अइसन जनाला कि हवा भी थाम्हि जाई। नीनि में परल परान कबो-कबो अइसन चिहुकेला जइसे केहू झकझोरि के जबरिया जमा देले होखे। जिम्दारी टूटि गइल। देस अजाद हो गइल। सभ केहू अपना घर-दुआर के मलिकार हो गइल। कहे सुने के अजादी हो गइल। बाकिर ई नवका करिक्का अंगरेज फफनि के बेहया लेख एतना जल्दी पसरि गइलनि स कि किछु कहात नइखे। सुराज जरुर मिलल, बाकिर एह बदमासन का चलते आम आदमी का जिनिगी में कवनों बदलाव नइखे लउकत। हमरा परोस का परबतिया अइसन गंवईं के लाखन गुड़िया, धनेसरी, तेतरी, बहेतरी, अफती, लखनवती, लखिया, हजरीआ रोज रोज बदमासन के हविश के शिकार हो रहल बाड़ी स। बाकिर मंत्रीजी का तुफानी हवा का आगे गरीबन क बेना क बतास का करी?

शासन पर काबिज बदमाश, थाना पर मनियरा सांप लेखा फुंफुकारत थानेदार, पाजी पियादा, नशा में मातल मंत्री, इसकूल में बदहवाश मुदर्रिश, बेहोश वैद जीप कार के नसेड़ी डरेबर, केकर-केकर बाति कहीं, सभे कहूं कवनो अनहोनी का डर से चुप्पी सधले बा। नाहीं त सुपुटि के जीव चोरावत बा। अइसना बदहाली में केहू किछु कह ना पाई, बाकिर हमरा इत्मीनान बा कि अइसहीं मनमानी-बेवस्था ना चली। एक न एक दिन बदलाव जरूर आई।

पितरपख का निसु राति में पोखरा का जलकुंभी से कबो-कबो छप्प-छप्प क सबद सुनाई परेला। कबो-कबो त एको जनमतुआ निराह राति में पहर-दू-पहर भर केहां-केहां करेला। अइसन बुझाला कि ओह जनमतुवा के चुप करावे बदे परबतिया पुरूवा हवा का पंख पर चढ़ि के मंत्री जी से बदला लेबे खातिर छिछियाइल फिरेले। जब भोर होखे लागेला त जनाला कि जनमतुआ थाकि के सुति गइल आ परबतिया एक दम शांत भाव से लिखल चिट्टी पढ़ि-पढ़ि के सुनावे लागे ले -

प्रिय मंत्री जी!

याद बा नू उ दिन जब आप हमरा संगे..... वादा कइले रहलीं कि सूरूज ए ने-ओने भले हो जइहें, चान भलहीं टसकि जइहें, ध्रुवतारा खिसकि जाई, गंगा के धार बदल जाई, बाकिर हमार पियार अमिट रही, अमर रहि। का उ दिन भुला गइलीं ? हम आपे का इंतजारी में पोखरा का कींच-कांच, पांक पानी में परल बानीं। का होई ए देहि के ? का होई एह अबोध जनमतुआ के ? ई का बिगरले रहे जे एके आप एह दिन के देखवलीं ?

आप याद राखीं अर्जुन का बेटा का माथे मउर ना बन्हाई, कर्ण के कवच भलहीं कवनों कामे ना आई, बाकिर आप इहो समुझि लेइब कि कबुर का आह से उपजलि आग में पूंजीवादी बेवस्था जरि-जरि के राि ख हो जाई आ माथ के मुकुट गंगा का अरार लेखा भहरा के मटिया मेट हो जाइ। देस समाज गांव गंवई के बेवस्था चोटी से ना चली। इहो जाने के परी की शासन वेवस्था में लागल अदीमी के लंगोटी के बेदाग राखे के पारी आ बेदाग ना रही त झंउसहीं के परी।

आपे के परबतिया

काशीपुर नई बस्ती, कदम चौराहा,
बलिया - 277 001

नयका कविता

झाह में जिनगी

मलयार्जुन

शोर बा
मयना के मारण मंत्र का
डहर भुलाइल
लउर के हूरा
जूरा
बान्हे
पर्स में राखत
मोबाइल झीन
बीच बजरिया
देखा
बतियावत
केसे
जे पेंदी का हीन
बे पानी
कस ना मानी
नूर नुक्सा से गायब
कबले भौंह रंगाई
छेंकल बुढ़ापा राह
झाह में जिनगी
आग का खोरी
सुनी नु प्रलाप
के के रास्ता मिलल
फोफर।

वरिष्ठ मनोरंजन कर निरीक्षक, बलिया

देवी गीत

कृष्णा नन्द तिवारी

उर्फ किशन गोरखपुरी

माई शेरावाली क पूजिला चरनियां
कि सुति उठिना ।
माई दीहितीं दरशनियां कि सुति उठिना,
हो कि सुति उठि ना ।।

लालि रंग चुनरी आ नारियल चढ़ाईला.. ।
माई के दुअरिया पे सिरवा झुकाइला ।।
माई लेहड़ावली क धरीला शरनियां,
कि सुति उठिना ।माई दीहितीं दरशनियां 0

धूप-अगरबतिया ले माई के देखाइला ।
रउरे मंदिरवा में असरा लगाइला।।
माई विन्ध्याचली जी के करीला भजनियां,
कि सुति उठिना। माई दीहितीं दरशनियां 0

नवरात्रि माई के पूजन जे करावेला ।
मय पाप कटि जाला,
सुखी जीवन पावेला ।।
गावेलन 'किशन' माई सगरी कहनियां,
कि घूमि-घूमिना ।
माई दीहीती दरशनियां कि सुति उठिना,
हो कि सुति उठिना ।।

पुलिस चौकी, सतनी सराय, बलिया।

कहानी

एहसान

डा0 श्री प्रकाश पाण्डेय

इ बइठक साधारण ना रहे। सत्ताधारी पार्टी के मुखिया अउरी उनुकर सब विश्वासी लोग बड़ा गम्भीर मुद्दा पर बातचीत करत रहे लोग। वइसे त उनुकर सरकार चार साल से चलत रहे अउरी पांचवा साल में चुनाव होखे के रहे। समस्या इ ना रहे कि चार साल में सरकार के काम काज निमन रहे कि बाउर, समस्या इहो ना रहे कि अगिला साल ओट में जीत मिली की हार। समस्या इ रहे कि अगर नेताजी फेरू मु ख्यमंत्री ना बनब त का होई ?

इ समस्या मुख्यमंत्री के विश्वासी लोगन के सेहत से कवनो सम्बन्ध ना राखत रहे। इ त नेताजी के 'परसनल' समस्या रहे। लेकिन विश्वासी चमचवनी के आपन विचार व्यक्त करे के मोका मिलल रहे त उ बड़ा गम्भीर मुद्दा बनवले रहले स। जइसे कि सामने प्रलय आवे वाला होखें अउरी इ ओह प्रलय से बचाव के राहता खोजत होख स।

एह बैठक में पांचे आदमी रहले। एगो खुद नेताजी, जवन चार साल से प्रदेश के मुख्यमंत्री रहलन, दोसरका उनुकर हमजात व्यक्तिगत सचिव। तीसरका उनुकरे पार्टी के कोषाध्यक्ष। चउथका उनुका पाटी के प्रदेश अध्यक्ष आ पांचवा उनुकर भाई, जे अभी पनरह दिन पहिले एगो मेहरारू के बलात्कार अउरी ओहकर हत्या कइला के बाद भी मजा से घुमत रहले।

चार साल के सरकार चलवला में प्रदेश बीस साल पीछे चलि गइल रहे, इ उन्हन लोग खाती कवनो समस्या ना रहे। चार साल में अपराध में तीन गुना विकास भइल रहे, इ ओह बैठक के कवनों मुद्दा ना रहे। चार साल में प्रदेश के बिजली, सड़क, स्कूल अउरी रोजगार के सब व्यवस्था तहस-नहस हो गइल रहे ,इहो कवनों बड़ बात ना रहे। चार साल से प्रदेश में गुण्डा राज चलत रहे, एह बात के कवनों चिन्ता नेताजी के ना रहे। चार साल में कतना किसान आत्महत्या कइले रहले, इ कवनो समस्या ओह बइठककर्ता लोग के ना रहे।

चार साल में प्रदेश में जवन भइल, तवन प्रदेश के लोग के बरबाद करे वाला काम भइल। इ कवनो ध्यान देबे वाला बात ना रहे। चार साल में नेता जी के पार्टी के लोग जवन मन कइल तवन नेताजी के आदमी होखला के नाम पर कइल, लेकिन नेताजी के ओह से कवनो परसानी ना रहे। त फेरू परसानी काथी के रहे?

बइठक में मुख्यमंत्री के सचिव जी बोलल शुरू कइले - 'जइसन की रउआ सब जानतानी कि अगिला साल ओट होखे वाला बा। इ जरूरी नइखे कि जनता हमहनी के जिताइए दी। काहें से कि लोकतन्त्र में जनता बे पेनी के लोटा होली स। आजू रउआ संगे बिया काल्हू केहू अउरी के संगे होई जाई। चुनाव में हार-जीत नेताजी के कवनों समस्या नइखे, काहें से कि ओकर ठीका बाहर के लोगन के दिया जाई। ओह खातीर नेताजी आपना खास अधिकारियन के ड्यूटी में लगा देबि। आ फेरू चुनाव चार साल बाद बावे ओकर चिन्ता करे खातीर हमनी के नइखीं जा बइठल। जइसन की रउआ सब जानतानी कि नेताजी कतना गरीब परिवार से रहनी आ इहां के बाबूजी व खेत में मजदूरी कइले.....।'

'चूप ना रह सचिव। तहरा से इहे पूछाता कि नेताजी के बाबूजी का रहनी ? उहां के उपर कइगो हत्या बलात्कार के केस बा ? तू मेन बात बताव।' - मुख्यमंत्री के सचिव के बात काटि के प्रदेश अध्यक्ष फूफकरले।

'हमार इ मतलब नइखे। हम चाहतानी कि रउआ सब मए बात ठीक से समझि जाई।'

‘त तू ई कहल चाहतार कि जे गरीब होला ओकर लइका मुख्यमंत्री ना होले स।’ - नेताजी के भाई गरम होई गइले।

‘तू चूप रह..। जब तक पूरा बात समझि में ना आवे तब तक कहीं टांग ना अड़ावल जाला।’ - नेताजी आपन भाई के समझवले। ’अब हमरे सब बात बतावे के परी। इ ठीक बा कि हमार जीवन खुलल किताब हवे आ ओकरा के रउआ सभे खूब पढ़ले बानी। फेरू हम ओह के दोहरा देत बानी।‘

नेता जी आपन कहानी बखान करे लगलें -

‘बात ई ओहिजा से शुरू होखल जब हम दस बरिस के रहनी आ मुन्ना दू बरिस के।’ - नेता जी अपना छोटा भाई के एहि नाम से पुकारत रहनी।

‘ओह दिन हम बेमार पड़ल रहनी आ माई-बाबूजी हमरा खटिया के लगे हमरा ठीक हो खे के आशा लेके बइठल रहल लोग तबियत में कुछ सुधार रहे तबे गांव के धनिक हमरा घरे अइले आ हमरा बाबूजी से कहलें कि का रे शिवधनिया आजू का करत रहले हा कि काम प ना अइलेह ? ’

‘ओइसे त उ धनिक आदमी के उमिर हमरा बाबूजी से कमे रहे, लेकिन बाबूजी हाथ जोरी के कहले कि मालिक लइका के तबियत खराब रहल ह, ओहि बिपति में फंसि गइल रहनी हा। आतना सुनला के बाद उ धनिक कहले कि तोरा अपना लइका के फिकिर बा आ हमार काम के नइखे ?’

‘ई बात नइखे मालिक।’

‘त कवन बात बा ?’

‘मालिक हमार लइका.....।’

‘चूप। चलू हमरा संगे आजू ढेर जरूरी काम बावे।’

‘लइका के छोड़ि के ?’

‘हं।’

‘ना मालिक अइसन मति करीं।’

‘ते ना चलबे ?’

‘ना।’

‘बाबूजी के अतना कहते उनुकर लात मुक्का से स्वागत शुरू हो गइल। उ तब तक ओह धनी आदमी के लाख प्रयास के बाद भी लात खात रहि गइले जब तक कि उ हांफे ना लागल।’ - ई कहि के नेताजी के आंखि डबडिया गइल। माहौल गमगीन हो गईल। आंखि पोछि के नेताजी फेरू शुरू हो गईलन -

‘हम पढ़े में तेज रहनी लेकिन पेट भरे के काम आ पढ़ाई एक संगे ना चलित। लेकिन तबो हम हिम्मत ना हरनी। दुख त एह बात के रहे कि उ आदमी अक्सर बाबूजी के मारे। एक दिन इहे होत रहे त उ हमरा से बरदास ना भइल आ लेहना काटे वाली गड़ासी से ओह आदमी के गरदन काटि दिहनी। चौदह बरिस में पहिला खून। तब से कहां के पढ़ाई ! एगो ई धन्धे शुरू हो गइल खून करे के।

‘हमरा लगे एक से एक नेता लोग के बुलावा आवे आ हम उन्हन लोग के जीतावे के ठीका लीहीं आ आपना गिरोह के आदमी से बूथ कैप्चरिंग करा के जीतवाईं।

एगो समय अइसन आइल कि हमार जीतवावल चालीस पचास के करीब विधायक जीते लगलें। हमरा के पईसा लईकी देबे के आ कानून से बचावे के काम ओहि नेतवन के रहे। लेकिन ई कब तक चलित। इ बात हमरा समझि में आ गइल कि हमरा जीतववला से इ विधायक मंत्री बनि सकेलन स त हम काहें ना ?’

नेताजी कुछ देरि सांस लिहनी, बाकिर चारो आदमी एह रूप में नेताजी के बात सांस रोकिके सुनत रहे लोग जइसे कवनो जासूसी धारवाहिक देखत होखस लोग।

‘एकरा बाद जवन भइल ओकरा से रउआ सभ परिचित बानी। अब हम मेन

बात पर आवतानी। राजनीति में आके हम विधायक, मंत्री, आ मुख्यमंत्री तक पहुंच गइनी। मुख्यमंत्री के रूप में तबादला, कमीशन आ कई तरीका के गलत काम से हम अरबो रूपिया कमइनी। बस इहे रूपिया हमरा चिन्ता के जरि बा।'

'भइया हमरा तहार बात समझि में नइखे आवत रूपया तहरा के काहें परसान कईले बा।' - मुन्ना कुछुना समझले।

'मुन्ना बात ई बा कि केन्द्र सरकार हमरा से टेढ़ नजर राखेले आ ओकरा जब मोका मिली हमार सरकार के बरखास्त कइके राज्यपाल के देख रेख में ओट करवाई। तब जरूरी नइखे कि जवन हमनी के चाहबि जा तवने होई। अगर दोसर सरकार आई त एह धन के लुकवावल मुश्किल हो जाई।'

एका-एक जइसे सब नींद से जागल आ आपन माथा पीट के लगभग समवेत आवाज में बोलल लोग कि ई बात त हमनी के समझिए न पवनी हा जा।'

'अब समझि में आ गइल होखे त रउआ सब एह धन के सुरक्षित करे के कवनो उपाई बताईं।'

बइठक में चूप्पी छापी लिहलसि। सब आपन-अरपन दिमाग खपावे लागल। लगभग पनरह मिनट के चूप्पी के बाद नेताजी के नीजि सचिव बोलले कि - 'श्रीमान एगो उपाई बा कि ओह धन के अधिकांश हिस्सा सफेद बना दिहल जाई।'

'लेकिन एह में बहुते धन टेक्स में चलि जाइ।' - कोषाध्यक्ष आपन चिन्ता प्रकट कईलन।

तले प्रदेश अध्यक्ष बोलले - 'आ फेरू इ समस्या बा कि आतना धन आइल कहां से ? इ कइसे देखावल जाई ?'

'इ समस्या के समाधान हमरा लगे बा। पहिले नेता जी तैयार होखीं तब !'

नेताजी कुछ सकुचइले, सोचले, फेरू मुह खोलले - 'इ बात ठीक बा कि जब तक हम्हनी के सरकार बिया जवन मन करता करत बानी जा। लेकिन काल्हू के देखले बा ? अगर बात टैक्स दिहला के बा त जेल गइला आ पइसा छिनइला से अच्छे नू बा। हमरा तहार विचार नीक लागत बा। तू आपन योजना के खुलासा कर..।'

'नेताजी के लगे जतना धन बा ओकर खुलासा करे के एगो उपाई बा कि आजुए से नेताजी पूरा प्रदेश के तूफानी दौरा करीं । हर बलाक, हर कस्बा, इहां तक कि हर गांव में सम्भव होखे त राउर कार्यक्रम लागे। ओह पार्टी में कार्यक्रम में इ पहिले से घोषणा होखे कि रउआ पाटी के लोग रउआ के चन्दा दी। उ चन्दा त नाम मात्र के रही। रउआ चाहीं त मंच से लाखन रूपया के घोषणा करि सकेनी। आ फेरू दू महिना बाद राउर जन्मदिन बा। ओह जन्मदिन में राउर पार्टी के विधायक, मंत्री, जिलाध्यक्ष आदि से चन्दा मांगी। चन्दा मिले कम ओकर सरकारी घोषणा अधिक होखे। इ अब राउर मर्जी कि रउआ कतना के टैक्स देत बानी आ फेरू उपहार के देता, कतना देता, एकर हिसाब के राखेला ?'

इ कहि के निजी सचिव विजई मुद्रा में सबके देखले। सब हल्का सा मुसुकाइल आ सबके नजर नेताजी पर टिक गइल। नेताजी भी मुसकइलें।

सब कुछ ठीक हो गइल। एह काम में ध्यान देबे वाली बात ई रहे कि नेताजी के देशभक्ति मुअल ना रहे। एकर प्रमाण इ रहे कि उ अउरी लोगन नियर आपन धन 'स्वीस' बैंक में ना रखले। नेताजी के ई ए हसान देश पर हमेशा रही।

एमए, पीएचडी, त्रिकालपुर,
रेवती, बलिया, उ.प्र.

लेख

भोजपुरी लोकगीत में आधुनिक भाव-बोध

सतीश प्रसाद सिन्हा

लोकगीत जन-जीवन, सभ्यता, संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज, खान-पान सभकुछ के दरपन होला। लोकगीत क्षेत्रीय लोक जीवन के विशेष रूप स अभिव्यक्त करेला। भोजपुरी लोकगीत दोसर क्षेत्रीय लोकगीतन के तुलना में अधिक विस्तार आ लोकप्रियता पवले बा। एकर कारण शब्दन के बाहुल्य, माटी के सुगंध, मिठास आ सरल भाव बोध के आधिक्य कहल जा सकेला। भोजपुरी के सरल आ सहज भावपूर्ण शब्द अपना के हिन्दी के गीत काफी समृद्ध आ लोकप्रिय भइल बा। सिनेमा के जवन गीतन में भोजपुरी शैली अपनावल गइल उ 'हिट' हो गइल।

भोजपुरी गीतन के परंपरा काफी पुराना बा। कवनों तरह के संस्कार होखे, भा शादी-विआह होखे, रीति-रिवाज होखे, तीज-तेवहार होखे, पूजा-पाठ होखे, जनम-मरण होखे, सभ अवसर खतिर गीत बनल बाड़े स। हरेक मौसम के गीतन में उतारल गइल बा। धान रोपनी होखे भा कटनी भा दंवाई, सभ खातिर गीत बनल बाड़े स। कहे के मतलब कि जिनगी के कवनो अइसन पक्ष नइखे जे लोक-गीत से ना जुड़ल होखे।

भोजपुरी के अतना लोकप्रिय आ सांस्कृतिक भइलो प आधुनिक भाव-बोध आ ओकर समृद्धि का नांव प ओकरा में जहां-तहां दोसर-दोसर हिन्दी के कठिन शब्दन के हरसठे व्यवहार कइ के ओकर मिठास, सरलता, स्वाभाविकता आ भाव बोध के मोसकिल बनावल जा रहल बा। भाषा के प्रगति, समृद्धि, विस्तार भा परिस्कृत करे खातिर ओतने भर प्रयास होखे के चाहीं, जेमे ओकर मौलिकता आ स्वाभाविकता प जांच ना अवे।

भोजपुरी खातिर सबसे बड़ खतरा त ई बा कि आजु भोजपुरी के गीतन में भोजपुरी, शैली आ धुन में अश्लील भाव दे के ओकरा के बजारू आ सड़क छाप बनावल जा रहल बा। अश्लील गीतन के कैसेट का माध्यम से भोजपुरी के अस्मिता बेंचल खरीदल जा रहल बा। ई दौर के रोके खातिर भोजपुरी भाषा भाषी आ भोजपुरी साहित्य आ गीतन के रचनाकारन के संगठित रूप से आगा आवेके परी। ना त भोजपुरी के आउर छीछा लेदर हो सकेला।

संतोष के बात बा कि भोजपुरी के रचनाकार लोग के ध्यान एह ओरि आकर्षित हो रहल बा। पटना से प्रकाशित होखे वाली लघु पत्रिका 'कविता' के संपादक श्री जगन्नाथ जी भी भोजपुरी गीतन का ओर विशेष रूप से धेयान देले बानी आ लोक-छन्दन के मात्रिक छन्दन में उचित परिस्कार देके आ समय संदर्भ से जोड़ि के लोक विधा के जीवन्त आ समृद्ध बनावे के निहोरा कइले बानी। लोक शैली प आधारित गीतन के विशेषांको प्रकाशित करे के विचार कइले बानी। एकर स्वागत होखे के चाहीं।

पारंपरिक लोक शैली, राग भा धुन में गीत रचल अगर असंभव ना त तनी कठिन जरूर बा। पारंपरिक लोकगीतन में भाव आ विषय कवनो ना कवनो संदर्भ के जड़ से अतना मजबूती का साथे जुड़ल बाड़े स कि ओकरा जगह प कवनो दोसर भाव भा विषय के आरोपित कइल कठिन काम बा। अगर ई कइलो जाव त का भोजपुरी लोगन के भा गीत गवइयन के ग्राह्य-स्वीकार्य हो सकेला? जइसे सावन माह के बरखा गीतन के विषय-भाव, शादी-विआह के विभिन्न अवसर के भाव, सोहर गीत, छठ के गीत आदि आदि। हमरा विचार से पहिले ओही विषय-भाव के छांदिक गीत के रूप दे के ओह में शास्त्रीयता स्थापित करे के चाही,

ताकि भाषा आ छंद का जरिये उ परिस्कृत हो सके आ दोसर भाषा का साथ खड़ा हो सके। पारंपरिक संस्कार-गीतन के विषय के भी आधुनिक संदर्भ से जोड़ल जा सकेला, जइसे भोजपुरी के ग्राम शैली में आजकल गीत लिखा रहल बा। ओह गीतन में शास्त्रीयता के गुण आ आधुनिक संबंध के प्रयास कइल जा सकेला।

एकरा अलावा इहो सचाई के धेयान में रा खल जरूरी बा कि लोक गीतन में भाव आ विषय का साथे संस्कार, संस्कृति लोक-जीवन के पारंपरिक गाथा भी छुपल होला। लोक गीतन का जरिये ओह संस्कृति आ संस्कार के भी बचावल ओतने जरूरी बा जतना लोक राग, शैली आ ओकरा में शास्त्रीयता के गुण भरल।

हमनी का सामने प्रश्न ई बा कि लोक शैली के गीतन में ओही विषय के केन्द्र में रा ख के आधुनिक भाव-बोध के गीत लिखल जाव, कि पारंपरिक आ संस्कारिक विषय-भाव का जगहा प आधुनिक संदर्भ के भाव-विषय के आरोपित कइल जाव, जइसन कि कुछ लोग के विचार बा, जवना से हम सहमत नइखीं, काहे कि लोक शैली का गीतन के परान ओकर विषय पारंपरिक रीति-रिवाज, जीवन शैली आ संस्कार होला। लोकगीत ओकर वाहक होला। भोजपुरी गीतन में फूहड़ भाव के रोकना जरूरी बा। ओकर स्तर के उठावे आ परिस्कृत करे के प्रयास भी जरूरी बा। ओकरा में छांदिक आ शास्त्रीय गुण भी भरल जरूरी बा आ ओके आधुनिक संदर्भ के भाव-बोध देहल भी जरूरी बा। एकरा में कवनों दू मत नइखे। बाकी एकरा साथे ईहो धेयान में राखल बहुत आवश्यक बा कि आपन परंपरा आ संस्कार से लोक गीत बिछुड़ ना जावे।

कल्याण बिहार, अम्बेडकर पथ,
बेली रोड, पटना - 800 014

कविता

अयनक में

रामनिवास वर्मा 'शिशिर'

अयनक में
ना देखे
आपन कोई चेहरा ।
देखेला ओकर चेहरा
जे दिल में
बईठल रहेला ।
ना सवांरे
आपन सूरत,
सवांरे ला
ओकर सूरत,
जे दिल में
बईठल रहेला ।
झेल लेला दरद,
भूल जाला गम,
ओकरा खातिर,
जे दिल में
बईठल रहेला ।
तन्हाई में जिनिगी
गुजार लेला,
भीड़ लेखा
ओकरे खातिर
जे दिल में
बईठल रहेला ।
रोके हंस लेला,
खो के पा लेला,
मर के जी लेला,
ओकरे खातिर
जे दिल में
बईठल रहेला ।

ब्रहमपुर, बक्सर, पिन - 802112